SHRI T. N. SINGH: The translation is this: What is it which makes a man happy? What is the most surprising thing in the world? And what is the way by which one should go? And what should be the main theme?

SHRI BHUPESH GUPTA: The answer is only one word—Morarji Desai.

SHRI T. N. SINGH: Don't try to tread on fields where you do not know anything.

The first question was को मोदते :what keeps one happy. And do you know what the answer was?

पञ्चमेऽहनि षष्ठे वा शाकं पचति स्वे गृहे ।
अनृणी चाप्रवासी च स वारिचर मोदते ॥

A man who is not living in a foreign land, who eats his own food, who cooks his own food, may be on the 5th or 6th day, who is not indebted, indeed such a man is happy.

3 P.M.

SHRI BHUPESH GUPTA: Kindly allow him another two or three minutes. When they are former Ministers, they speak better. When they are out of office, they speak better.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Do not take away his time.

SHRI T. N. SINGH: I do not want to tread on the time of the House. I want to say that we should be *Anrini* that is we should not be in debt. I know that in some situations we have got to take loans, but we should also have the capacity to pay them which we have not to day. Therefore, cut out this foreign indebtedness Do not have it. We would much rather starve in our own poor houses. but then I say while Mr Bhupesh Gupta seems to be appreciating what I am saying . . .

SHRI BHUPESH GUPTA: Yes, I do. I appreciate former Ministers.

SHRI T. N. SINGH: I am sorry to say that when it comes to leading a life of some privation and difficulties, they are the first to raise their voice against it. We have got to put up with our poverty for some time. Let us reconcile ourselves to that and let us not try to bring heaven on earth immediately. With these words, I conclude.

TWENTY-SEVENTH REPORT OF THE COMMITTEE ON PUBLIC UNDERTAKINGS (1968-69)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, Mr. Bhatt, you were not in the House. There is a Report to be laid on the Table of the House.

SHRI N. K. BHATT (Madhya Pradesh): Madam, I beg to lay on the Table a copy of the Twenty-seventh Report of the Committee on Public Undertakings (1968-69) on Hindustan Cables Limited [Paras in Section II of Audit Report (Commercial) 1968]

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Rajnarain.

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal): What about my documentry Mr. Fakhruddin Ali Ahmed is here. Kindly give us the minutes of the 41st Meeting of the Company Law Board, the report of inspection on the books of the Pilani Investment Corporation and the report of inspection on the Jeeyajee Rao Cotton Mills. All this shows that Rs. 3 crores and 70 lakhs have been swindled by the Birlas. Here I have got the full text of the report. Kindly let us have that.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please, it is not an item on the Order Paper Mr. Rajnarain.

THE MINISTER OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT, INTERNAL TRADE AND COMPANY AFFAIRS (SHRI FAKHRUDDIN ALI AHMED): What do you want?

SHRI BHUPESH GUPTA: I have just read out the three reports . . .

(*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, you cannot read them.

SHRI BHUPESH GUPTA: Let him have a look at it.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Not now. You may send it to him. Mr Rajnarain.

THE BUDGET (GENERAL), 1969-70—GENERAL DISCUSSION—*Contd.*

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) माननीया, मैं वित्त मंत्री श्री मोरारजी देसाई द्वारा प्रस्तुत जो चौथी पंचवर्षीय आयोजना की अवधि का पहला बजट है उस पर कुछ कहने के पूर्व उन्हीं के तर्क को प्रस्तुत करना चाहूंगा। उन्होंने खुद अपने बजट भाषण में यह लिखा है कि वे तो केवल सूत्रधार हैं और पंचवर्षीय आयोजना का जो नाटक या नौटंकी है, उस नाटक का अभी आरम्भ होगा। मगर उस नाटक के खुलने के पहले जैसे आरम्भ होता है किसी नाटक में कि सूत्रधार आ करके परदे को खोल कर दर्शकों की अभिरुचि को बढ़ाता है, उसी तरह से यह उनका बजट भाषण माननीय सदस्यों की अभिरुचि को बढ़ाने वाला है। वास्तव में बजट को देख कर मेरी अभिरुचि नहीं बढ़ी। मैं ऐसी पंच-वर्षीय आयोजना की नौटंकी या नाटक को देखना पसन्द ही नहीं करता जिस में निरन्तर, लगातार गरीबी बढ़ती जाती हो, लगातार बेकारी बढ़ती जाती हो, लगातार समाज के निम्नतम स्तर के जो लोग हैं उन पर टैक्स का बोझ बढ़ता जा रहा हो, निम्नमध्यम वर्ग की जनता पर टैक्स का बोझ बढ़ता जा रहा हो और उच्चतम स्तर के जो लोग हैं उन पर टैक्स का बोझ पहले से कम हो रहा हो। माननीया, हमारी स्वेच्छा पर बहुत ही कम समय है। मैं इसके एक एक आंकड़े को लेकर चलना चाहता था, मगर मैं अपने इस राइट को प्रिजर्व करता हूं कल के लिये जब हमको एप्रोप्रिएशन बिल पर बोलना पड़ेगा।

इतनी बात अगर मैं बिना कहे आगे बढ़ूं तो मैं अपने कर्तव्य का पालन नहीं करूंगा कि इस समय वास्तव में इस सरकार के मंत्रिगण जो हैं उनको एक जगह बैठ कर और स्वतः अपने चेहरे पर कालिख पोत कर के इस सरकार को भंग कर देना चाहिये क्योंकि जिस सरकार के डिपार्टमेंट के कागजात बराबर खुलते रहते हैं, दूसरों के पास जाते रहते हैं और बाजार में खुले आम बिक्री होते है, उस सरकार को रहने का कोई अधिकार नहीं है अगर उस सरकार में तनिक भी मर्यादा और नैतिकता का ज्ञान है तो।

श्री भूपेश जी ने बहुत ही सही बात कही थी। माइन्यूट्स आफ 41 मीटिंग आफ द कम्पनी ला बोर्ड के बारे में उन्होंने कहा, जिसमें दो रपट के बारे में चर्चा है। एक जांच की रपट है विजयजी राव काटन मिल्स लिमिटेड की और यह दिसम्बर, 1967 की है। एक दूसरी जांच रपट है इन्स्पेक्शन को। बुक्स आफ मेसर्स पिलानी इनवेस्टमेंट कारपोरेशन की 31 अगस्त से 8 दिसम्बर, 1967 तक जो जांच हुई है उसकी रपट है। तीसरी जांच रपट है जियाजी राव काटन मिल्स लिमिटेड की। 27-9-67 से 7-10-67 तक जो जांच हुई है उसकी रपट है। उसकी बाकायदा आफिशियल कापी भूपेश गुप्त जी के पास आई है। सरकार उसमें चाहे कितना इन्कार करना चाहे, इन्कार हो नहीं सकती। इसलिये अब चाहे आप भूपेश जी से उसे टेबिल पर रखवायें, चाहे सरकार को आप मजबूर करें कि सरकार उसे टेबिल पर रखे ताकि हम लोग उसको समझ कर अच्छी तरह से पढ़ें।